Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II (कला वर्ग)

भाग – 2

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1.वर्ण, स्वर व व्यंजन	1
2.शब्द ज्ञान	13
3.तत्सम-तद्भव	16
4.संज्ञा	18
5.सर्वनाम	20
6.विशेषण	22
7.क्रिया	25
8.काल	27
9.लिंग	29
10.वचन	29
11.अव्यय	31
12.विदेशी भाषाओं के शब्द	34
13.संधि	37
14.समास	44
15.उपसर्ग	49
16.प्रत्यय	53
17.वाच्य	56
18.कारक	59
19.विराम चिन्ह और उनके प्रयोग	69
20.वाक्य	73
21.वाक्य रचना	81
22.वाक्य शुद्धि	85
23.शुद्ध वाक्य	87
24.मुहावरे	94

25.लोकोक्ति 105

26.पद्यांश 119

27.पाठ योजना 127

28.शिक्षण विधियाँ 135

29.चर्चा 154

30.मापन व मूल्यांकन 156

31.भाषा 163

वर्ण, स्वर व व्यंजन

⇒ उच्चरित रूप को ध्वनि कहते है।

⇒ उच्चरित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है।

⇒ ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते है
लिखित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ जिस वर्ण के आगे कोई टुकडे नही होते है उन्हे अक्षर कहते है।
⇒ अक्षर चार होते है — अ, इ, उ, ऋ

Note दो या दो से अधिक सार्थक वर्णों के समुहो को शब्द कहते है।

⇒ शब्द दो प्रकार के होते है — 1) सार्थक ② निरर्थक

⇒ निरर्थक — नि: + अर्थक — विसर्ग सन्धि — चाय — वाय
⇒ निर + अर्थक — निरर्थक (संयोग) — खाना — वाना
पंखा — वंखा

⇒ अर्थ की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई शब्द होती है।
⇒ दो या दो से अधिक सार्थक शब्दो के अर्थ समुहो को वाक्य कहते है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ भावो और विचारो की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई वाक्य है।

⇒ विद्वानो ने भाषा की पूर्ण परिपक्व इकाई वाक्य को कहा है।

1 ⇒ व्याकरण
2 ⇒ वैयाकरण – व्याकरण का भाग

सही शब्द ⇒ , प्रज्वल, प्रज्वलित, प्रोज्जवल

⇒ भाषा की सबसे बडी इकाई वाक्य को कहा जाता है।

⇒ कुल - योग पैर मे पुरा । (क्रम)
कूल – किनारा सिर मे आधा ॥ (कर्म)

:- वर्ण :-

⇒ सर्वप्रथम 'अ' वर्ण की उत्पत्ती हुई।
⇒ सभी वर्णो की उत्पत्ति शिवजी के डमरू से हुई।
⇒ वर्णो को लिपी चिन्ह कहते है
⇒ वर्णो की संख्या हिन्दी 44 होती है, हिन्दी मे कुल वर्णो की संख्या 52 होती है।

⇒ स्वर :– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ
ओ, औ

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ वर्णों के भेद – वर्णों के दो भेद होते हैं :–
⇒ स्वर (11) (2) अजन (33)

⇒ स्वर :– जिन वर्णों के उच्चारण मे स्वर तंत्रिकाओं मे कम्पन, घर्षण, और बल नही लगाया जाता है उन्हे स्वर कहते है।

⇒ स्वर स्वतंत्र होते है। वृत्ति – स्वतंत्र
⇒ स्वरो के छः भेद होते है। वृत्ती – विवृत

(1) उच्चारण काल के आधार पर
(2) उच्चारण के आधार पर
(3) उत्पति के आधार पर
(4) जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर
(5) ओस्ठाकृति के आधार पर
(6) मुखाकृति के आधार पर

1 उच्चारण काल के आधार पर स्वरो के भेद

⇓

⇓ स्वर (ह्रस्व स्वर) ⇓ गुरू स्वर (दीर्घ स्वर)

| अ, इ, उ, ऋ | | आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ |

सही शब्द ⇒ ह्रस्व : ह्रदय – हृदय, ह्रद – तालाब

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1 ⇒ लघु स्वर :- जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है उन्हे लघु-स्वर कहते है।

⇒ लघु स्वरों की संख्या हिन्दी में चार होती है :-
(अ, इ, उ, ऋ)

⇒ लघु स्वरों के अन्य नाम :-
(1) अक्षर स्वर (2) ह्रस्व स्वर
(3) नैसर्गिक स्वर (4) अखण्डित स्वर
(5) प्राकृतिक स्वर (6) मूल स्वर
(7) एक मात्रा वाले स्वर

⇒ लघु शब्द का विलोम गुरू होता है।
⇒ लघु + अ = लाघव ह्रस्व + अ = ह्रस्व
दीर्घ + अ = दीर्घ गुरू + अ = गौरव

2 गुरू स्वर ⇒ जिन स्वरों के उच्चारण में लघु स्वरों से दुगुना समय लगता है उन्हे गुरू स्वर कहते है।

⇒ हिन्दी में गुरू स्वरों की संख्या 7 सात है :-
(आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)

⇒ गुरू स्वरों के अन्य नाम ⇒
(1) दीर्घ स्वर
(2) दो मात्रा वाले स्वर
(3) संयुक्त स्वर

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ (4) खण्डित स्वर
(5) मिश्रित स्वर
(6) संधि स्वर

⇒ ह्रस्व स्वरों के दो भेद :-
(1) समदीर्घ स्वर / सजातीय दीर्घ स्वर
(आ, ई, ऊ)
(2) विषम दीर्घ स्वर / विजातीय दीर्घ स्वर
[ए, ओ, ऐ, औ]

अ, आ, इ, ई

⇒ अ + अ = आ
इ + ई = ई
उ + ऊ = ऊ
— समजातीय दीर्घ स्वर

अ / आ + इ / ई = ए
अ / आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ए = ऐ
अ / आ + ओ = औ
— विषमजातीय दीर्घ स्वर

⇒ शब्दकोषीय क्रमानुसार स्वरों का सही क्रम
(ए, ऐ, ओ, औ)

⇒ पाणिनीय व्याकरणानुसार स्वरों का सही क्रम
(ए, ओ, ऐ औ)

⇒ शब्दकोषीय क्रमानुसार व्यंजनों का सही क्रम (य, र, ल, व)
⇒ पाणिनीय व्याकरणानुसार व्यंजनों का सही क्रम
(य, व, र, ल)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ उत्पत्ति के आधार पर स्वरों के भेद :-

मूल स्वर
अ, इ, उ, ऋ

संधि स्वर
आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

आ, ई, ऊ ⇒ दीर्घ संधि स्वर
ए, ओ ⇒ गुण संधि स्वर
ऐ, औ ⇒ वृद्धि सान्धि स्वर

⇒ लम्बोष्ठ — ऊँट, शाखामृग — बन्दर

⇒ जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर स्वरों के भेद

स्वरों के भेद

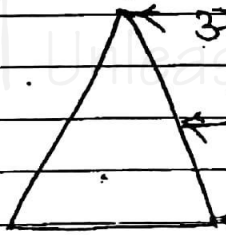

उदासीन स्वर

1. अग्र स्वर ⇒ जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा जिह्वा का (आगे का) अग्र भाग सक्रीय होता है तो उन्हें अग्र स्वर कहते हैं – (इ, ई, ऋ, ए, ऐ)

2. मध्य स्वर ⇒ जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ बीच का भाग सक्रीय होता है उन्हे मध्य स्वर कहते है। — (अ)

3 पश्च स्वर :- जिन स्वरो के उच्चारण मे जिह्वा का पीछे का भाग सक्रीय होते है उन्हे पश्च स्वर कहते है — आ, उ, ऊ, ओ, औ

4 ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरो के भेद

दो भेद होते है — उ, ऊ, ओ, औ
(1) वृत्ताकार / वृत्तमुखी
(2) अवृत्ताकार / अवृत्तमुखी
अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

1. वृत्ताकार ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे ओठो की आकृति गोल हो जाती है उन्हे वृत्तमुखी स्वर कहते है।
— —, ऊ, ओ, औ,

2. अवृत्ताकार ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण में ओष्ठो की आकृति गोल नही होकर अन्य किसी भी आकृति मे हो जाती है उन्हे अवृत्तमुखी स्वर कहते है।
— अ, आ, इ, ई, , ऋ ए ऐ

ओर — तरफ और ⇒ अन्य
उपसर्ग अपसर्ग / पर सर्ग।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5 मुखाकृति के आधार पर :-

बन्द ← → संवृत - इ, ई, उ, ऊ
→ अर्द्ध संवृत - ए, ओ
→ विवृत - आ
खुला ← → अर्द्ध विवृत - अ, ऐ, औ

: व्यंजन :-

→ जिन वर्णों के उच्चारण मे स्वरो की सहायता ली जाती है उन्हे व्यंजन कहते है।
इनके उच्चारण मे स्वर तंत्रिकाओ में घर्षण होता है, कम्पन होता है और बल लगाया जाता है।

→ व्यंजनो को मुख्यत: तीन भागो मे बांटा जाता है
<1> स्पर्श / अदत → क से म तक पांच वर्ग होते है - 25
<2> अन्त: स्थ → य, र, ल, व - 4
<3> ऊष्म → श, ष, स, ह - 4

→ <1> स्पर्श व्यंजन → जिन व्यंजनो के उच्चारण मे स्वर तंत्रिकाओ मे सामान्य रूप मे घर्षण या कंपन होता है उन्हे स्पर्श व्यंजन कहते है।
- स्पर्श व्यंजनो की संख्या - 25 है
- (क से म तक)

⇒ <2> अन्तस्थ व्यंजन ⇒ जिन व्यंजनो के उच्चारण में सामान्य से भी कम स्वर तंत्री कम्पन या घर्षण होता है उन्हे अन्तस्थ व्यंजन कहते है - 4 (य र ल व)

⇒ <3> ऊष्म का शाब्दिक अर्थ ⇒ गर्मी होता है जिन व्यंजनो के उच्चारण मे सबसे अधिक कंपन या घर्षण होता है उन्हे ऊष्म व्यंजन कहते है - 4 (श ष स ह)

उच्चारण स्थान

1 ⇒ कण्ठ ⇒ अ आ क वर्ग (क, ख, ग, घ ङ) ह इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

2 ⇒ तालु ⇒ इ, ई, च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) य, श इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान तालु है।

3 ⇒ मूर्धा ⇒ ऋ ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) र, ष इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

4 ⇒ दन्त ⇒ त वर्ग (त, थ, द, ध, न) ल, स, इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान दन्त है।
हिन्दी में ल, स, न वर्त्स्य (मसूडा)

(5) ओष्ठ → उ, ऊ, प वर्ग (प, फ, ब, भ, म) इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

(6) नासिक और अपना-अपना वर्ग है

ङ् — कण्ठ नासिक
ञ् — तालु नासिक
ण् — मुर्धा नासिक
न् — दन्त नासिक
म् — ओष्ठ नासिक

इन वर्णों का उच्चारण स्थान नासिक और अपना-अपना वर्ग है।

- कण्ठ तालु — ए, ऐ
- कण्ठोष्ठ — ओ, औ
- दन्तोष्ठ — व
- नासिका — (ं) अनुस्वार

उच्चारण आधार पर व्यंजनो के भेद

1. स्पर्शी → क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध प फ ब भ (16)
2. संघर्ष स्पर्शी → च छ, ज झ — (4)
3. संघर्षी → श, ष स ह — (4)
4. नासिक्य → ङ ञ ण न म — 5
5. अति क्षिप्त → ड़, ढ़ — 2
6. पार्श्विक → ल — 1
7. प्रकम्पित → र — 1

Toppersnotes
Unleash the topper in you

कम्पन के आधार पर व्यंजनो के भेद

विसर्ग (:) - अघोष	अनुस्वार	घोष
(12)	(ं)	(345)

वर्ग —

क वर्ग —	क ख	क - ग घ ङ
च वर्ग —	च छ	च - ज झ ञ
ट वर्ग —	ट ठ	ट - ड ढ ण
त वर्ग —	त थ	त - द ध न
प वर्ग —	प फ	प - ब भ म
	श ष स	य र ल व ह
	(13)	(20)

⟹ श्वास वायु के आधार पर व्यंजनो के भेद

अनुस्वार (ं) → अल्पप्राण (135)

(:) विसर्ग → महाप्राण (२५)

क वर्ग —	क ग ङ	क — ख घ
च —	च ज ञ	च — छ झ
ट —	ट ड ण	ट — ठ ढ
त —	त द न	त — थ ध
प —	प ब म	प - फ भ
	य र ल व	श ष स ह
	19	14
स्वर	11	
	30	

स्वर = 11
व्यंजन – 33
संयुक्त व्यंजन – 4
~~अयोगवाह वर्ण~~ – 2 (ड़, ढ़, ~~ऱ~~) उत्क्षिप्त
~~उत्क्षिप्त~~
अयोगवाह वर्ण – 2
↓
1 अनुस्वार (ं) 2 विसर्ग (ः)

संयुक्त व्यंजन – 4

1. क्ष – क् + ष = क्ष
2. त्र – त् + र – त्र
3. ज्ञ – ज् + –
4. श्र – श् + र – श्र

→ कुल वर्णों की संख्या – 52
वर्णों की संख्या – 44

शब्द

सार्थक शब्द — निरर्थक शब्द

1. प्रयोग के आधार पर / रूप परिवर्तन के आधार पर
2. उत्पत्ति के आधार पर
3. व्युत्पत्ति के आधार पर / रचना के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

1. प्रयोग के आधार पर / रूप परिवर्तन के आधार

विकारी

(i) संज्ञा
2. सर्वनाम
3. विशेषण
4. क्रिया

अविकारी / अव्यय

1. ⇒ क्रिया विशेषण
2. ⇒ समुच्चय बोधक
3. ⇒ सम्बन्ध बोधक
4. ⇒ विस्मयादि बोधक

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2. उत्पत्ति के आधार पर

1 → तत्सम
2 → तद्भव
3 → देशज
4 → विदेशज
5 → संकर

3. व्युत्पत्ति के आधार पर / रचना के आधार पर

1 → रूढ़
2. → यौगिक
3 → योगरूढ़ - (बहुव्रीहि) के उदाहरण

4. अर्थ के आधार पर (VPAYS)

1 → विलोम
2. → पर्यायवाची
3 → अनेकार्थी
4 → युग्म शब्द
5 → समानार्थक शब्द

1 विकारी शब्द :- वे शब्द जिन पर लिंग वचन, काल या कारक का प्रभाव पड़ता है उन्हें विकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात् वे शब्द जिनके रूप लिंग वचन काल, कारक के आधार पर रूप परिवर्तित होता है उन्हें विकारी शब्द कहते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

विकारी शब्द चार होते है।

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम
(3) विशेषण (4) क्रिया

अविकारी / अव्यय - वे शब्द जिन पर लिंग वचन, कारक, काल का प्रभाव नही पड़ता है उन्हे अविकारी शब्द कहते है। अविकारी शब्दों को अव्यय कहते है।

अविकारी शब्द चार होते है :-

1. क्रिया विशेषण
2. समुच्चय बोधक
3. सम्बन्ध बोधक
4. विस्मयादि बोधक
5. निपात